करणविचार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

करण पञ्चाङ्ग का पाँचवां एवं अन्तिम अंग है। तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं अर्थात् एक तिथि में दो करण होते हैं। सूर्य से चन्द्रमा के 6 अंश का अन्तर ही एक करण का कारण बनता है। अतः चान्द्रमास के अनुसार 1 महीने में 60 करण होते हैं। कुल 11 करणों के नाम इस प्रकार हैं-बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न। इनमें वव से लेकर विष्टि तक चर करण हैं तथा अन्य सभी स्थिर करण। बृहत्संहिता में कहा गया है-

बवबालवकौलवतैतिलाख्यगरवणिजविष्टिसंज्ञानाम्।

अर्थात् बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये सात चल करण हैं।

पुनः

कृष्णचतुर्दश्यर्धाद् ध्रुवाणि शकुनिश्चतुष्पदं नागम्।

किंस्तुघ्नमिति च तेषां……..।।

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्ध में नाग, उत्तरार्ध में चतुष्पद और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है। ये चार स्थिर करण है।

स्थिर करण प्रत्येक चान्द्रमास में एक बार ही आते हैं जबकि चर करणों की आवृत्ति प्रत्येक चान्द्रमास में आठ बार होती है। 8*7=56 चर करण तथा 4 स्थिर करण=60 करण। तिथि, नक्षत्र, योग के समान करणों के भी स्वामी होते हैं। इनका उल्लेख आगे किया जा रहा है-

करण	स्वामी
वव	इन्द्र

E-learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वालव	ब्रह्मा
कौलव	सूर्य
तैतिल	सूर्य
गर	पृथिवी
वणिज	लक्ष्मी
विष्टि	यम
शकुनि	कलियुग
चतुष्पद	रुद्र
नाग	सर्प
किंस्तुघ्न	वायु

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध से प्रारम्भ होकर अमावस्या तथा शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के पूर्वार्ध तक चारों स्थिर करण अपरिवर्तित रहने के कारण ही इन्हें स्थिर करण कहा जाता है। इसमें विष्टिकरण को ही भद्रा कहते हैं। ज्योतिषशास्त्र की मान्यता के अनुसार भद्रा में शुभकार्य निषिद्ध हैं। किन्तु वध, बन्धन, विष प्रयोग, अभिचार कर्म, अग्निदाह तथा क्रूर कर्म भद्रा में विहित हैं। विष्टि (भद्रा) करण प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की तृतीया का उत्तरार्ध, सप्तमी का पूर्वार्ध, दशमी का उत्तरार्ध तथा चतुर्दशी का पूर्वार्ध इसी प्रकार प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की चतुर्थी उत्तरार्ध, अष्टमी के पूर्वार्ध, एकादशी के उत्तरार्ध तथा पूर्णिमा के पूर्वार्ध में रहता है। ग्यारह करणों में विष्टि करण भद्रा को ही अधिक अशुभ माना गया है। इसमें शुभकर्म निषिद्ध हैं। भद्रा की तीन स्थितियाँ मानी गई हैं-

(अ)यदि उस दिन चन्द्रमा मेष, वृष, मिथुन या वृश्चिक राशि मंडल में हो- भद्रा स्वर्ग में।

(आ) यदि कन्या, तुला, धनु या मकर राशिमण्डल में हो- भद्रा पाताल में

(इ) यदि चन्द्रमा कर्क, सिंह, कुम्भ या मीन राशिमण्डल में हो-भद्रा पृथिवी में।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

स्वर्ग या पाताल की भद्रा होने पर पृथिवी पर उसका कुप्रभाव कम माना जाता है, अतः विशेष स्थिति में (यदि भद्रा स्वर्ग या पाताल की हो) उसे शुभ कामों में ग्राह्य करते हैं। पृथिवी की भद्रा त्याज्य है।

करणों में कर्तव्य कर्म-

करण	करणीय कर्म
वव	पुष्टि के निमित्त कर्म, शुभ (धर्म आदि), चर (अल्प समय में होने वाला कार्य), स्थिर (बहुत देर तक ठहरने वाला)
बालव	धर्मक्रिया, वास्तु, गृहप्रवेश, निधिस्थापन आदि शुभ स्थिर कर्म, ब्राह्मणों के हितकारक कर्म
कौलव	प्रीति (किसी के स्थान स्नेह), स्त्री सम्बन्धी, वरण (कन्यावरण) तथा सज्जन मैत्री आदि कर्म
तैतिल	सौभाग्य (जिस कार्य को करने से सबका प्रिय बने), संश्रय, गृह-सम्बन्धी कार्य सज्जन सेवा, राजसेवादि कर्म
गर	खेती, कृषि सम्बन्धी, बीज बोना, आश्रम सम्बन्धी कार्य इत्यादि
वणिज	स्थिर कार्य, वाणिज्य, युति (किसी के साथ संयोग) सम्बन्धी कार्य, क्रय-विक्रयादि कर्म
विष्टि	कोई भी कार्य शुभ नहीं होता है। शत्रुओं का नाश, विष का प्रयोग, अग्निदाह, दुष्ट चोर आदि का वध, बन्धन जैसे उग्र कर्म
शकुनि	पौष्टिक कार्य, मन्त्र सम्बन्धी कार्य, यन्त्र सम्बन्धी कार्य, औषध सेवन, मूल (जड़ को लेना, रोपना, खाना) आदि कर्म
चतुष्पद	गाय तथा ब्राह्मण की पूजा, पितरों का श्राद्ध, राज्य सम्बन्धी कार्य
नाग	स्थिर कर्म, दारुण, हरण, दौर्भाग्य (जिस कार्य को करने से दूसरे से द्वेष उत्पन्न हो सके), भूतादिसाधन

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

किंस्तुघ्न	धर्म,इष्टि (पुत्रकाम्य आदि), पुष्टि (शरीर पुष्टि), मङ्गल (विवाहादि), सिद्धिक्रिया (जिस क्रिया के करने से कार्य की सिद्धि हो उसके) चित्र खींचना, नाचना, गाना इत्यादि कर्म।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi